वेग के आने पर जीवन की प्रवृत्ति के अनुसार ...

मनोविकारी अथवा समाज-विरोधी व्यक्तित्व

(PSYCHOPATHIC OR ANTI-SOCIAL PERSONALITY)

प्रत्येक समाज में नैतिकता के अपने-अपने मापदण्ड होते हैं और प्रत्येक व्यक्ति से आशा की जाती है कि वह अपने समाज के निर्धारित मापदण्ड के अनुसार अपना व्यवहार रखेगा। इसके विरुद्ध व्यवहार को समाज-विरोधी व्यवहार कहा जाता है। अत: किसी व्यक्ति का व्यवहार समाज-विरोधी होना उस समाज के पूर्व निर्धारित मापदण्डों पर निर्भर करता है। जो व्यवहार एक समाज में मान्य होता है, हो सकता है कि वही व्यवहार दूसरे समाज में बुरा समझा जाता हो। प्रत्येक समाज में एक-सा व्यवहार समाजस्वीकृत नहीं होता। उदाहरणस्वरूप, पश्चिमी देशों में

Scanned with CamScanner

सार्वजनिक स्थान पर किसी महिला का चुम्बन लेना समाजस्वीकृत है पर यही व्यवहार भारत में समाज-विरोधी है। इसके अतिरिक्त समय-समय पर प्रत्येक समाज के नियम विकास के अनुसार परिवर्तित होते रहते हैं, जिसके कारण एक समय में एक ही व्यवहार एक समाज में समाज-विरोधी माना जाता है। वही व्यवहार समय परिवर्तित होने पर उसी समाज में सामान्य व्यवहार माना जाता है। उदाहरणार्थ, पहले बाल-विवाह व सती प्रथा सामान्य व्यवहार में आते थे, पर अब इन प्रथाओं को समाज-विरोधी माना जाता है। समाज-विरोधी व्यक्तित्व की कुछ मुख्य परिभाषाएँ निम्न हैं–

(1) **डी. एन. श्रीवास्तव** के अनुसार, "समाज-विरोधी व्यक्ति जानता है कि दूसरे लोग उससे क्या आशा रखते हैं परन्तु वह जानबूझकर दूसरे व्यक्तियों की आशाओं के विरुद्ध कार्य करता है। वह आज्ञापालन नहीं करता है, झगड़ा करता है और तोड़-फोड़ करने वाला होता है। वह दूसरों को सताता है और स्वयं गलत रहकर व्यक्तिगत आनन्द प्राप्त करता है।"

(2) **कॉलमैन** के अनुसार, "इनकी मुख्य विशेषता नैतिक विकास का अभाव है। ये समाज द्वारा स्वीकृत मान्य व्यवहारों को करने के अयोग्य होते हैं। मूल रूप से ये असामाजिक होते हैं। ये दूसरे व्यक्तियों, समूहों या सामाजिक मूल्यों के प्रति सार्थक रूप से वफादारी के अयोग्य होते हैं।"

उपर्युक्त उद्धृत परिभाषाओं के अनुसार जो गलत कार्य करता है जैसे–सिद्धान्तहीन व्यापारी, कुटिल राजनीतिज्ञ, कपटी वकील, डाकू, गुण्डे और नीम हकीम चिकित्सक, बलात्कारी, वेश्याएँ आदि समाज-विरोधी व्यक्तित्व के अन्तर्गत आता है। ये सभी व्यक्ति समाज के नैतिक विकास के विरोधी होते हैं।

समाज-विरोधी व्यक्तित्व का नैदानिक स्वरूप
(CLINICAL PICTURE OF ANTI-SOCIAL PERSONALITY)

मनोविकारी व्यक्तित्व की कुछ सामान्य विशेषताएँ निम्न हैं–

(1) **चिन्ता की भावना का अभाव** (Lack of Feeling of Anxiety)–मानसिक विकास से पीड़ित व्यक्तियों को अपने गलत कार्यों के करने की चिन्ता नहीं होती। उन्हें दूसरों की भावनाओं का कोई अहसास या अनुभूति नहीं होती। वे अपने कार्यों को सही समझते हैं और अपने व्यवहार सम्बन्धी दोषों को दूर करने का प्रयत्न भी नहीं करते।

(2) **सदाचार की भावना की अपूर्णता** (Inadequate Conscience Development)–मनोविकारी व्यक्तित्व वाले व्यक्ति सर्वदा नैतिकता के विरुद्ध कार्य करते हैं उनमें सदाचार की भावना अपूर्ण होती है। पर्याप्त मात्रा में विकसित नहीं होती। वे अच्छा-बुरा, धर्म अधर्म, उचित-अनुचित विचारने की चेष्टा नहीं करते। इसका मुख्य कारण सुपर इगो का कमजोर होना है। वे अपनी अन्तरआत्मा को सुनना नहीं चाहते। फलस्वरूप व्यक्ति का व्यवहार सामाजिक-सांस्कृतिक एवं नैतिक मूल्यों के विरुद्ध होता है।

(3) **अच्छा पारस्परिक सम्बन्ध बनाये रखने की अयोग्यता** (Inability to Maintain Good Interpersonal Relations)–मनोविकारी व्यक्तित्व वाले व्यक्ति में मित्रता निभाने की योग्यता नहीं होती। ऐसे व्यक्ति नित्य ही नये मित्र बनाते हैं और इनके पुराने मित्र अलग हो जाते हैं। ये मित्रता का सम्बन्ध बनाये रखने में कमजोर होते हैं।

(4) **दूसरों से लाभ उठाने, प्रभाव डालने तथा अपनी त्रुटियों को दूसरों पर आरोपित करने की प्रवृत्ति** (They Exploit Others Impression upon and Project their own Defects on Others)–मानसिक विकार से पीड़ित व्यक्ति अपने स्वार्थ के लिए, अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिए दूसरों का शोषण करने से नहीं चूकते। दूसरों का अनिष्ट करने से पीछे नहीं हटते हैं। उनका उद्देश्य होता है केवल अपना सुख। वे अपनी कमियों को दूसरों पर आरोपित करते हैं तथा उन पर अपना प्रभुत्व रखते हैं।

(5) **अनुत्तरदायी एवं आवेशपूर्ण व्यवहार तथा निराशाओं की सहनशीलता** (Irresponsable and Impulsive Behaviour and Low Frustration Tolerance)–मनोविकारी व्यक्तित्व वाले किसी भी कार्य के प्रति अपना उत्तरदायित्व नहीं समझते और छोटी-छोटी बात पर आवेश में आ जाते हैं। वे दूसरों की भलाई, उनके अधिकारों, आवश्यकताओं आदि विचारों से मुक्त होते हैं। उनके लिए सामाजिक मूल्य कोई अर्थ

Scanned with CamScanner

नहीं रखते हैं, वे उनकी अवहेलना करते हैं। उनके जीवन में यदि निराशा आ जाए तो वे उसे सहन नहीं करते हैं और निराशा आने से वे अधिक उग्र हो जाते हैं।

(4) अन्य विशेषताएँ (Other Characteristics)—मनोविकारी व्यक्तित्व वाले व्यक्तियों में संवेगात्मक अस्थिरता पायी जाती है। ये स्वभाव से असहनशील, अपरिपक्व तथा इच्छित कल्पना वाले व्यक्ति होते हैं।

मनोविकारी व्यक्तित्व के कारण (Different Causes of Psychopathic Personality)—मनोविकारी व्यक्तित्व के प्रकारों को बताना अत्यन्त कठिन है। इसके दो कारण मुख्य हैं—

(1) मनोविकारी व्यक्तित्व के अन्तर्गत व्यक्ति में चरित्र सम्बन्धी अनेक विकृतियाँ होती हैं, जिनकी गिनती करना कठिन है।

(2) मनोविकारी व्यक्तित्व वाले व्यक्ति सामान्यजन की भाँति होते हैं और अन्य लोगों की तरह सामान्य जीवन जीते हैं। वे अलग से दिखाई नहीं देते हैं। अतः उनके विषय में कोई जानकारी नहीं मिलती है।

मनोविकारी व्यक्तित्व या समाज-विरोधी व्यक्तित्व के प्रकार (Types of Psychopathic Personality)

(अ) समाज-विरोधी व्यक्तित्व (Anti Social Personality)—समाज-विरोधी व्यक्तित्व के अन्तर्गत भ्रष्ट व्यापारी, भ्रष्ट वकील, नीम हकीम डॉक्टर, बाल-अपराधी, ढोंगी साधु, वेश्या, भ्रष्ट राजनीतिज्ञ आदि आते हैं।

(ब) व्यक्तित्व की शीलगुण सम्बन्धी विकृतियाँ (Personality Trait Disorder)—शीलगुण सम्बन्धी विकृतियों के अन्तर्गत स्थिर व्यामोही व्यक्तित्व, मनोविदालित व्यक्तित्व, विस्फोटक व्यक्तित्व, उन्मादी व्यक्तित्व, अपूर्ण व्यक्तित्व आदि आते हैं।

(स) चारित्रिक विकृतियाँ (Character Disorder)—चारित्रिक विकृतियों के अन्तर्गत तुतलाना, हकलाना, दाँतों से नाखून काटना, मूत्र असंयम, बाध्यात्मक जुआ आदि आते हैं।

लक्षण (Symptoms)

कॉलमैन के अनुसार, समाज-विरोधी व्यक्तियों में कुछ प्रमुख विशेषताएँ निम्नांकित पायी जातीं हैं—

(1) समाज-विरोधी व्यक्तियों के लिए नैतिक मूल्यों का कोई अर्थ नहीं होता। वे केवल मौखिक स्तर पर ही नैतिक मूल्यों को अपनाते हैं। उनकी अन्तरात्मा में नैतिक मूल्यों का कोई स्थान नहीं होता। गलत कार्य या समाज-विरोधी कार्य करते समय उनकी अन्तरात्मा से कोई आवाज नहीं आती। अतः इनको नैतिक मूढ़ भी कहा जा सकता है।

(2) इनमें आत्मकेन्द्रित आवेगों और उत्तरदायित्व से बचने की प्रवृत्ति पायी जाती है। ये समाज के प्रति कोई भी नैतिक दायित्व नहीं निभाते हैं।

(3) ऐसे व्यक्तियों की कुण्ठाओं को सहने की बहुत शक्ति होती है, इसलिए ये लोग वर्तमान की जगह भविष्य में रहते हैं अर्थात् वर्तमान के सुख छोड़ भविष्य में होने वाले सुखों के लिए जीते हैं।

(4) ऐसे व्यक्ति स्वार्थी होते हैं। दूसरों से मित्रता की भावना प्रकट करते हैं तथा देखने में आशावादी व मजाकप्रिय लगते हैं लेकिन ये दूसरों से मित्रता करके अपने स्वार्थ की पूर्ति करते हैं। वे दूसरों की संवेदनाओं की चिन्ता नहीं करते हैं।

(5) ऐ.े व्यक्ति लापरवाह होते हैं। इनमें चिन्ता, तनाव और अपराध भावना बहुत कम मात्रा में पाई जाती है, किसी दूसरे के प्रति चिन्ता किसी समस्या के लिए तनाव तथा गलत कार्य के करने की आत्म, ग्लानि जैसे भाव बहुत कम मात्रा में होते हैं। ये व्यक्ति स्वभावतः आक्रमणकारी और शत्रुतापूर्ण व्यवहार करते हैं किन्तु दिखावे का व्यवहार बिल्कुल अलग होता है। ये अपने आपको इस तरह प्रस्तुत करते हैं कि लोग इन पर शक नहीं कर सकते कि ये अवैध गलत कार्य कर रहे हैं।

(6) ऐसे व्यक्ति अपनी स्वार्थपूर्ति और हेराफेरी करने में इतने चतुर होते हैं कि गलत करने पर भी कभी दण्ड या सजा नहीं पाते हैं। इनका कार्य करने का तरीका ही ऐसा होता है कि दूसरे मूर्ख बन जाते हैं।

Scanned with CamScanner